महालक्ष्मी नगर इन्दौर। शिवजयंती के पर्व पर चैतन्य देवियों झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात म.प्र. के स्वास्थ्य मंत्री महेंद्र हार्डिया, पूर्व कलेक्टर हरिसिंह शेखावत, ब्र.कु.विमला, ब्र.कु.अनिता,ब्र.कु.अन्नु तथा अन्य प्रभु स्मृति में।

मन्दसौर। महिला दिवस पर परिचर्चा में सशक्त नारी विषय पर उद्बोधन देते हुए ब्र.कु.समिता बहन

दुर्ग। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर चैतन्य देवियों की झांकी का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए नगर निगम की जलकार्य प्रभारी एवं अधिवक्ता नीता जैन, स्वरुपानंद कॉलेज की प्राचार्य डॉ.हंसा शुक्ला, समाज सेवी रत्ना नारंदेव एवं अन्य।

उज्जैन। दैनिक भास्कर के डायरेक्टर अमित गौड़ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पूनम

रतलाम। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अपने विचार प्रकट करते हुए ब्र.कु.अनिता। मंचासीन हैं एडीजे प्रविणा व्यास, उपभोक्ता फोरम की अध्यक्षा सबा खान, रेल महिला मण्डल की अध्यक्षा रश्मि नारायण।

धर्म और आध्यात्मिकता ही मानव की शोभा

इंदौर। संसार में आज जो भ्रष्टाचार, अपराध, बलात्कार आदि के द्वारा अशांति बढ रही है उसका मूल कारण आध्यात्मिकता की कमी है। मनुष्य और पशु में चार चीजें समान है- लडना, मरना, निद्रा और भोजन। लेकिन वो अगर पशु से भिन्न और श्रेष्ठ है तो वो धर्म और आध्यात्मिकता के कारण। धर्म और आध्यात्मिकता विहिन मनुष्य पशुवत है।

उक्त विचार महापौर कृष्णमुरारी मोघे ने महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित "सत्यम् शिवम् सुंदरम् का वास्तविक रहस्य" विषय पर व्यक्त किये। आगे आपने बताया कि अगर सत्-यम् शिवम् सुन्दरम् के सही रूप को हम समझे तो यह जग मिथ्या है और शिव सत्य है।

इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश 'भाई जी' ने परमात्मा के कर्त्तव्य को स्पष्ट करते हुये बताया कि जिस प्रकार माली के तीन कर्त्तव्य होते हैं-पौधे को रोपित करना, उसकी पालना करना एवं उसका विनाश करना अर्थात् उसको नष्ट कर फिर से नई कलम लगाना। परमात्मा भी नई नवसृष्टि की स्थापना, पालना एवं आसुरी सृष्टि का विनाश कर, रंगमंच पर स्वयं परमात्मा गीता में वर्णित वायदे अनुसार अवतरित होकर यह तीनों कर्त्तव्य कर रहे है।

जयपुरियां मेनेजमेंट कॉलेज के डाय-रेक्टर जे.पी. उपाध्याय ने कहा कि अगर हम भावनात्मक बुद्धिमत्ता से सम्पन्न होंगे तो लम्बे समय तक सुखी रह सकते है। साप्ताहिक नैनो दर्शन के सम्पादक जयकृष्ण गौड ने कहा कि जीवन परिवर्तन के लिए कोई प्रेरणा स्त्रोत हमारे सामने चाहिए और यह संस्था प्रेरणा स्त्रोत तैयार करती है। आय.पी.एस. अधिकारी व्ही.एन. पचौरी ने कहा कि मेरा कार्यक्षेत्र ऐसा रहा है जहां मरो या मारों वाली नीति को ही अपनाना पडता है। जिसके कारण क्रोध मेरे अंदर गहराई तक समाहित था लेकिन, संस्था के सम्पर्क में आने से मैने इस क्रोध रूपी शत्रु पर काफी हद तक जीत पा ली है। डॉ. एम.जी. नाहटा ने कहा कि समाज में इस तरह के सकारात्मक प्रयास से परिवर्तन निश्चित है। प्रसिद्ध समाजसेवी अनिल भंडारी ने कहा कि ईश्वर को पाने के लिए स्वाध्याय, ध्यान एवं योग जरूरी है पूर्व महापौर डॉ. उमाशशि शर्मा एवं पार्षद रमेश सरोज भारद्वाज ने भी अपनी शुभकामनायें व्यक्त की। इस अवसर पर निरोगधाम के सम्पादक डॉ. अशोक पांडे, तवलीन फाउण्डेशन के संस्थापक जी.एस. नारंग समेत शहर के अनेक गणमान्य नागरिक तथा संस्था से जुडे सैकडो श्रद्धालु उपस्थित थे।

इसके अलावा शिवमहिमा पर "दिव्य कन्या जीवन छात्रावास" की कुमारी अनामिका द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया तथा शहर के 77 गणमान्य लोगों ने दीप प्रज्वलित कर 77 वी. त्रिमूर्ति शिवजयंती (महाशिवरात्रि) के पर्व को धूमधाम से मनाया साथ ही, अपनी बुराईयों को बेलपत्र के रूप में शिवलिंग की प्रतिमा पर चढाया।

अतीत में ना जीएं, स्वयं को करें क्षमा

-ब्र.कु.सुमन

अतीत बीत कर समाप्त हो गया है। हम उसे बदल नहीं सकते। परन्तु हम अतीत के विषय में अपने विचारों को बदल सकते हैं। यह कितना मूर्खतापूर्ण है कि हम इसलिए वर्तमान में अपने आपको सजा देते हैं, क्योंकि अतीत में काफी पहले किसी ने हमें पीड़ा पहुँचाई थी।

गहरे असंतोष की प्रवृत्तियों वाले लोगों से मैं अकसर कहती हूँ, 'कृपया असंतोष को कम करना शुरू करें, अब वह अपेक्षाकृत आसान है। किसी सर्जन के छुरे के नीचे या मृत्यु-शैय्या तक पहुँचने के खतरे का इंतजार न करें, जब आपको डर से आमना-सामना करना पड़ सकता है।'

जब हम घबराहट की स्थिति में होते हैं तो अपना दिमाग उपचार एवं सुधार पर केन्द्रित करना कठिन होता है। हमें पहले ही डर को समाप्त करने पर समय लगाना होगा।

यदि हम यह विश्वास चाहते हैं कि हम असहाय-पीड़ित हैं और अब कोई उम्मीद नहीं है तो ब्रह्मांड भी इस विश्वास में हमारा साथ देगा और हम बरबाद हो जाएँगे। बेहतर है कि हम इन मूर्खतापूर्ण, पुराने, नकारात्मक विचारों व विश्वासों को छोड दें, जो हमारी मदद नहीं करते और विकास की ओर नहीं ले जाते। यहाँ तक कि ईश्वर का प्रारूप भी ऐसा होना चाहिए, जो हमारे लिए हो, हमारे खिलाफ नहीं।

अतीत को भूलने के लिए, हमें क्षमा करने के लिए तत्पर होना होगा -हमें अतीत को छोड़ने और अपने सहित हर किसी को क्षमा करने के लिए तैयार होने की जरूरत है। हो सकता है कि हमें क्षमा करना न आए और

हो सकता है कि हम क्षमा न करना चाहते हों; लेकिन हमारा यह कहना कि हम क्षमा करने को तैयार हैं, स्वस्थ करने की प्रक्रिया को आरम्भ कर देता है। यह हमारे अपने स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है कि हम अतीत को छोड़ दें और हर किसी को क्षमा कर दें। 'मैं तुम्हें जिस रूप में देखना चाहता था, वैसा रूप न होने के लिए मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ और मुक्त करता हूँ।'

सभी रोग क्षमा न करने के कारण से उत्पन्न होते हैं - जब भी हम बीमार होते हैं, हमें अपने दिल में झाँककर यह देखना चाहिए कि हमें किसे माफ करने की जरूरत है। कोर्स इन मिरेकल्स का कहना है कि 'सभी रोग क्षमा न करने की एक स्थिति से उभरते हैं' और 'जब भी हम बीमार होते हैं, हमें आस-पास यह देखना चाहिए कि हमें किसे माफ करने की जरूरत है।' मैं उस विचार में यह जोड़ना चाहूँगी कि जिस व्यक्ति को क्षमा करना आपको सबसे कठिन लगे, वही वह व्यक्ति है जिसे क्षमा करने की जरूरत आपको सबसे अधिक है। क्षमा करने का अर्थ है - छोड़ देना, जाने देना। इसका उस व्यवहार को क्षमा करने से कोई लेना-देना नहीं है। इसका मतलब है कि बस उस पूरी घटना को अनदेखा कर देना। हमें यह जानने की जरूरत नहीं है कि कैसे क्षमा करना है। हमें बस क्षमा करने के लिए तैयार रहने की जरूरत है। 'कैसे करना है' की चिंता–ब्रह्मांड स्वयं कर लेगा।

हम अपनी पीड़ा को बहुत अच्छी तरह समझते हैं। हममें से अधिकतर के लिए यह समझना कितना कठिन है कि जिन लोगों को माफ करने की बहुत अधिक आवश्यकता थी, वे भी पीड़ा में थे। हमें यह समझने की जरूरत है कि उनके पास उस समय जो समझ, जानकारी और ज्ञान था, उसके अनुसार वे सबसे अच्छा कर रहे थे।

जब लोग मेरे पास कोई समस्या लेकर आते हैं तो मैं ध्यान नहीं देती कि वह क्या है–खराब स्वास्थ्य, धन का अभाव, असंतोषजनक सम्बन्ध या दमित रचनात्मकता–मैं केवल एक चीज पर हमेशा ध्यान देती हूँ और वो है खुद से प्रेम करना। मैंने पाया है कि जब हम अपने आपको 'जैसे हैं वैसे रूप' में प्रेम करते और स्वीकार करते हैं तो जीवन में सबकुछ ठीक होता है। ऐसा, मानो हर जगह कुछ छोटे चमत्कार होते हैं। (शेष पेज 4 पर)